''महाभारत काल में कृषि व्यवस्था''

डॉ. समीर कुमार श्रीवास्तव

विश्व के इतिहास में जब मानव नव पाषण युग में प्रवेश किया तब से कृषि करना भी प्रारम्भ किया। अब तक फल तथा शिकार से प्राप्त मांस ही उसके जीवित रहने का एक मात्र आधार था। अभी तक वह आग से परिचित नहीं था। पत्थर को तोड़कर बनाए गए औजारों से कभी समूह में बड़े पशुओं का और कभी अकेले छोटे पशुओं का शिकार करता था। पर जनसंख्या का क्रमशः विकास होता गया। अब सम्भव नहीं था कि केवल शिकार और फल पर ही ये लोग रह सकें। तब सम्भवतः वृक्षों से गिरने वाले बीजों को, जो घूमने वाले जानवरों के पैरों से भूमि में दब जाते थे, उगते देखा तथा उनसे पुनः फल निकलते देख उनके मन में दलदली भूमि पर बीजों को बिखेर कर अधिक अन्न पैदा करने की बात आई होगी, जिससे कृषि का विकास हुआ हो। लगभग इसी क्रम में भारत में भी कृषि का विकास सम्भव हुआ होगा।